हमें आधी धरती और चाहिए

हमारी (या यों कहें कि हममें से कुछ लोगों की) जीवन शैली के चलते यह धरती छोटी पड़ने लगी है। राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा किए गए ताज़ा धरती स्वास्थ्य आकलन के मुताबिक हमें कम से कम डेढ़ धरती की ज़रूरत है। कहने का आशय है कि हमारी वर्तमान जरूरतें 1.4 धरती पूरा कर सकती है। दूसरा विकल्प यह है कि हम अपनी जीवन शैली में संयम बरतें अन्यथा मानवता खतरे में है।

राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम ने हाल ही में अपनी चौथी वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट के मुताबिक इंसान के इकॉलॉजिकल पदचिन्ह 21.9 हैक्टर भूमि प्रति व्यक्ति पर फैले हैं। मगर पृथ्वी की जैविक क्षमता मात्र 15.7 हैक्टर प्रति व्यक्ति की है। इकॉलॉजिकल पदचिन्ह का मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने उपभोग के लिए संसाधन प्राप्त करने तथा अपने कचरे को ठिकाने लगाने के लिए इतनी भूमि की ज़रूरत है।

ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क नामक संस्था के मुताबिक वर्ष 2007 में 6 अक्टूबर के दिन हम इकॉलॉजी की दृष्टि से ऋणग्रस्त हो गए थे। इसका मतलब है कि धरती एक वर्ष में जितना स्वयं का पुनर्जनन कर सकती है उतना हमने वर्ष 2007 में 6 अक्टूबर तक खा-पीकर खत्म कर लिया था।

इसी तरह की एक गणना *इकॉलॉजिकल इकॉनॉमिक्स* में भी प्रकाशित हुई है जिससे पता चलता है कि क्यूबा एकमात्र ऐसा देश है जिसका विकास टिकाऊ ढंग से हो रहा है। बाकी सारे राष्ट्र इकॉलॉजी के कर्ज़ में दबे हैं।

वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य (चतुर्थ) दुनिया भर के 400 विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन को सबसे बड़ा खतरा माना गया है। इकॉलॉजी पर हमारे पद चिन्हों का काफी बड़ा भाग तो यह है कि हमें अपने क्रियाकलापों से उत्सर्जित गैसों को सोखने के लिए काफी सारी ज़मीन और समुद्र की ज़रूरत होती है। पदचिन्हों का बाकी हिस्सा हमारा भोजन व ज़रूरत की अन्य चीज़ें उत्पादित करने में काम आता है।

कुल मिलाकर यह स्पष्ट है कि वर्तमान जीवन शैली और विकास निभने योग्य नहीं हैं। ऊर्जा उपयोग की कार्यक्षमता को बढ़ाना एक प्रमुख चुनौती है। मगर सिर्फ इससे काम नहीं चलेगा। जीवन शैली को बदलना एक प्राथमिकता बनानी ही होगी। ***(स्रोत फीचर्स)***